



Indu Pandey

27 Nov 1994

01:00 AM

Hojai

Model: Web-MyKundli

Order No: 119520601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 26-27/11/1994
दिन _____: शनि-रविवार
जन्म समय _____: 01:00:00 घंटे
इष्ट _____: 47:58:36 घटी
स्थान _____: Hojai
राज्य _____: Assam
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:00:00 उत्तर
रेखांश _____: 92:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:41:36 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 01:41:36 घंटे
वेलान्तर _____: 00:12:49 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:03:34 घंटे
सूर्योदय _____: 05:48:33 घंटे
सूर्यास्त _____: 16:26:35 घंटे
दिनमान _____: 10:38:02 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 10:31:31 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 07:01:02 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पू०फाल्गुनी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: वैधृति
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टा-टपकेश्वरी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1916	मार्गशीर्ष	6
पंजाबी	संवत : 2051	मार्गशीर्ष	12
बंगाली	सन् : 1401	मार्गशीर्ष	11
तमिल	संवत : 2051	कार्तिक	12
केरल	कोल्लम : 1170	वृश्चिक	11
नेपाली	संवत : 2051	मार्गशीर्ष	12
चैत्रादि	संवत : 2051	मार्गशीर्ष	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2051	कार्तिक	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
 तिथि समाप्ति काल _____ : 24:17:03
 जन्म तिथि _____ : 9
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मघा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 18:35:48 घंटे
 जन्म योग _____ : पू०फाल्गुनी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : ऐन्द्र
 योग समाप्ति काल _____ : 06:54:44 घंटे
 जन्म योग _____ : वैधृति
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
 करण समाप्ति काल _____ : 12:33:37 घंटे
 जन्म करण _____ : तैतिल
 भयात _____ : 16:00:28
 भभोग _____ : 59:17:36
 भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 14 वर्ष 7 मा 27 दि

घात चक्र

मास _____ : ज्येष्ठ
 तिथि _____ : 3-8-13
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : मूल
 योग _____ : धृति
 करण _____ : बव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मेष
 लग्न _____ : मीन
 सूर्य _____ : धनु
 चन्द्र _____ : वृश्चिक
 मंगल _____ : मकर
 बुध _____ : तुला
 गुरु _____ : कुम्भ
 शुक्र _____ : मीन
 शनि _____ : वृश्चिक
 राहु _____ : मेष

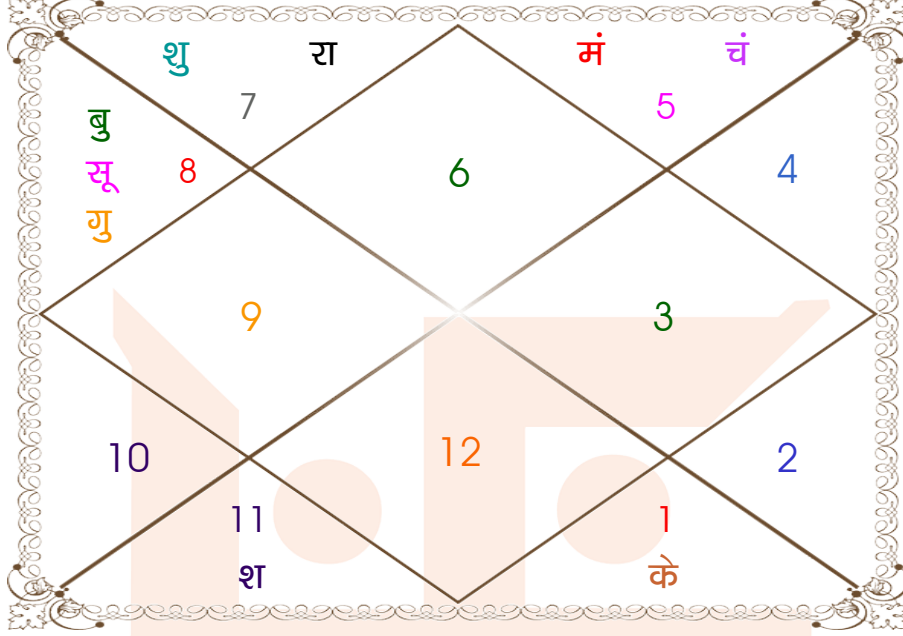


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

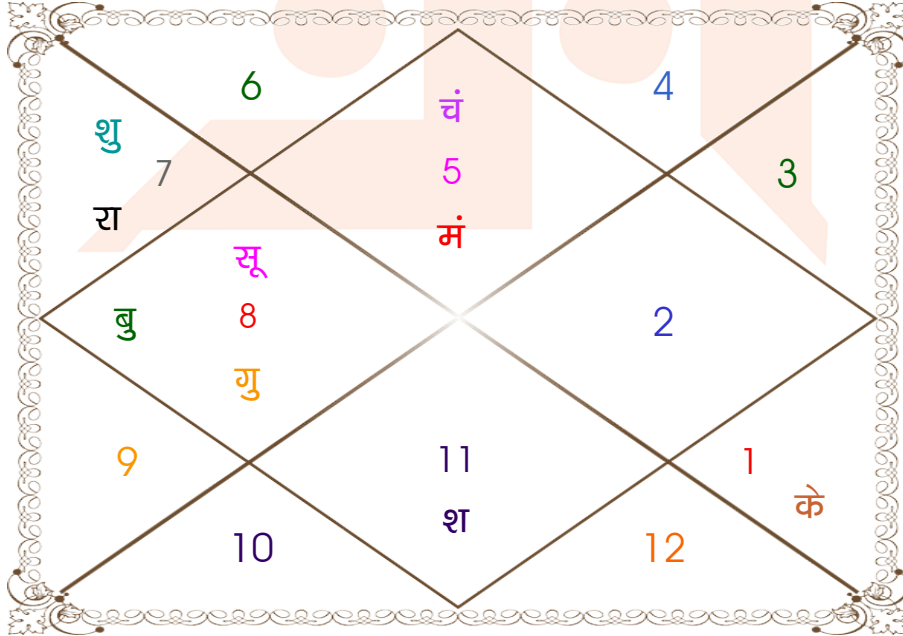


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	के		
श			
			मं चं
	गु सू बु	रा शु	ल

लग्न कुंडली

	के		
		श	
चं मं			
ल	शु रा	सू बु गु	

विंशोत्तरी
शुक्र 14वर्ष 7मा 27दि
शुक्र

27/11/1994

25/07/2109

शुक्र	24/07/2009
सूर्य	25/07/2015
चन्द्र	24/07/2025
मंगल	24/07/2032
राहु	25/07/2050
गुरु	25/07/2066
शनि	24/07/2085
बुध	26/07/2102
केतु	25/07/2109

योगिनी
उल्का 4वर्ष 4मा 23दि
भद्रिका

20/04/2024

20/04/2029

भद्रिका	30/12/2024
उल्का	30/10/2025
सिद्धा	20/10/2026
संकटा	30/11/2027
मंगला	20/01/2028
पिंगला	30/04/2028
धान्या	29/09/2028
भ्रामरी	20/04/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



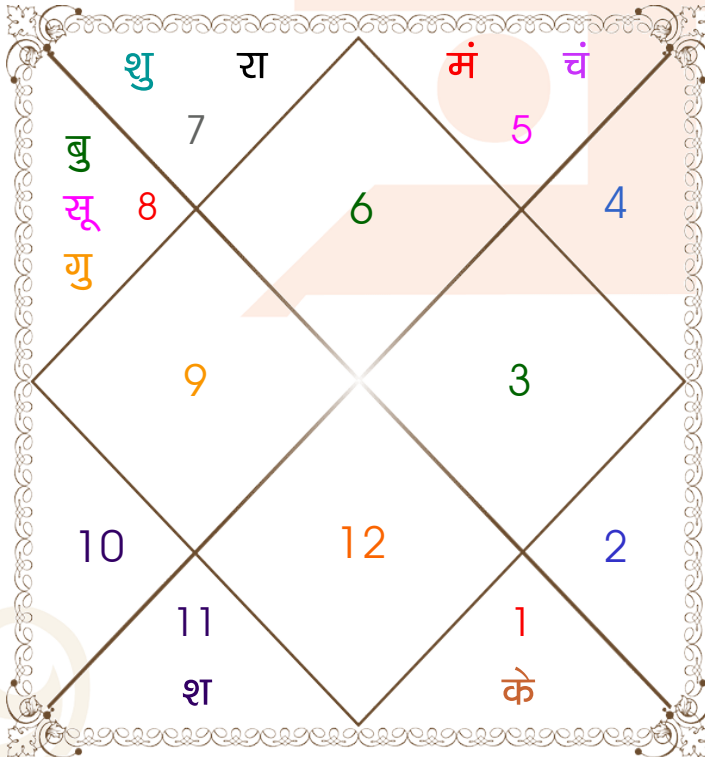
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	07:01:02	324:46:05	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	केतु	---
सूर्य			वृश्चि	10:31:31	01:00:44	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	16:53:41	13:24:02	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			सिंह	01:33:14	00:21:15	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	मित्र राशि
बुध	अ		वृश्चि	00:53:28	01:34:26	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	मंगल	सम राशि
गुरु	अ		वृश्चि	03:26:15	00:13:16	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	मित्र राशि
शुक्र			तुला	08:53:05	00:07:25	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण
शनि			कुंभ	12:09:23	00:01:49	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
राहु			तुला	20:51:16	00:00:43	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	मित्र राशि
केतु			मेष	20:51:16	00:00:43	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
हर्ष			धनु	29:52:15	00:02:35	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	राहु	---
नेप			धनु	27:36:04	00:01:41	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	---
प्लूटो			वृश्चि	04:25:56	00:02:23	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
दशम भाव			मिथु	07:02:00	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	राहु	--

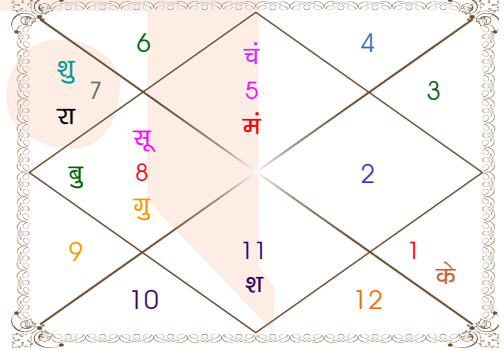
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:47:20

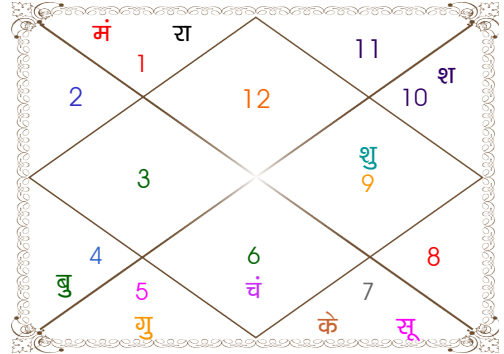
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 22:01:12	कन्या 07:01:02
2	कन्या 22:01:12	तुला 07:01:21
3	तुला 22:01:31	वृश्चिक 07:01:40
4	वृश्चिक 22:01:50	धनु 07:02:00
5	धनु 22:01:50	मकर 07:01:40
6	मकर 22:01:31	कुम्भ 07:01:21
7	कुम्भ 22:01:12	मीन 07:01:02
8	मीन 22:01:12	मेष 07:01:21
9	मेष 22:01:31	वृष 07:01:40
10	वृष 22:01:50	मिथुन 07:02:00
11	मिथुन 22:01:50	कर्क 07:01:40
12	कर्क 22:01:31	सिंह 07:01:21

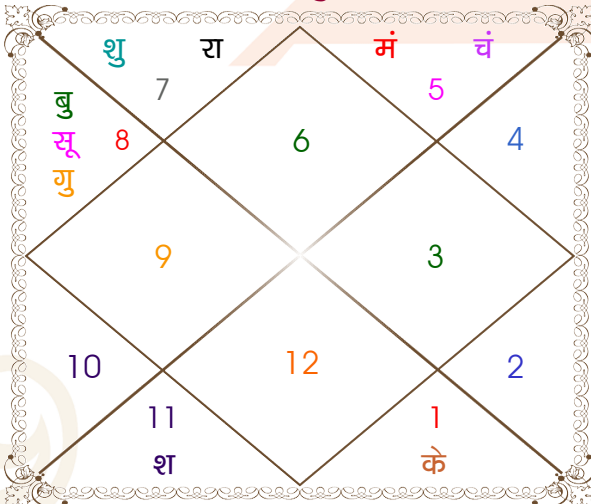
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	07:01:02
2	तुला	05:27:54
3	वृश्चिक	05:52:43
4	धनु	07:02:00
5	मकर	08:12:18
6	कुम्भ	08:37:43
7	मीन	07:01:02
8	मेष	05:27:54
9	वृष	05:52:43
10	मिथुन	07:02:00
11	कर्क	08:12:18
12	सिंह	08:37:43

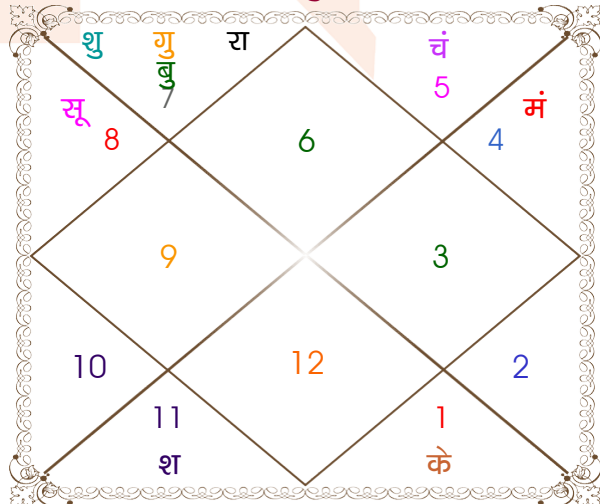
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 14 वर्ष 7 मास 27 दिन

शुक्र 20 वर्ष 27/11/1994 24/07/2009	सूर्य 6 वर्ष 24/07/2009 25/07/2015	चंद्र 10 वर्ष 25/07/2015 24/07/2025	मंगल 7 वर्ष 24/07/2025 24/07/2032	राहु 18 वर्ष 24/07/2032 25/07/2050
00/00/0000	सूर्य 11/11/2009	चंद्र 24/05/2016	मंगल 21/12/2025	राहु 06/04/2035
27/11/1994	चंद्र 13/05/2010	मंगल 23/12/2016	राहु 08/01/2027	गुरु 30/08/2037
चंद्र 25/07/1995	मंगल 17/09/2010	राहु 24/06/2018	गुरु 15/12/2027	शनि 06/07/2040
मंगल 23/09/1996	राहु 12/08/2011	गुरु 24/10/2019	शनि 23/01/2029	बुध 23/01/2043
राहु 24/09/1999	गुरु 30/05/2012	शनि 24/05/2021	बुध 20/01/2030	केतु 11/02/2044
गुरु 25/05/2002	शनि 12/05/2013	बुध 24/10/2022	केतु 18/06/2030	शुक्र 11/02/2047
शनि 24/07/2005	बुध 19/03/2014	केतु 25/05/2023	शुक्र 18/08/2031	सूर्य 05/01/2048
बुध 24/05/2008	केतु 25/07/2014	शुक्र 23/01/2025	सूर्य 24/12/2031	चंद्र 06/07/2049
केतु 24/07/2009	शुक्र 25/07/2015	सूर्य 24/07/2025	चंद्र 24/07/2032	मंगल 25/07/2050
गुरु 16 वर्ष 25/07/2050 25/07/2066	शनि 19 वर्ष 25/07/2066 24/07/2085	बुध 17 वर्ष 24/07/2085 26/07/2102	केतु 7 वर्ष 26/07/2102 25/07/2109	शुक्र 20 वर्ष 25/07/2109 00/00/0000
गुरु 11/09/2052	शनि 27/07/2069	बुध 21/12/2087	केतु 22/12/2102	शुक्र 24/11/2112
शनि 25/03/2055	बुध 06/04/2072	केतु 17/12/2088	शुक्र 21/02/2104	सूर्य 24/11/2113
बुध 30/06/2057	केतु 15/05/2073	शुक्र 18/10/2091	सूर्य 28/06/2104	चंद्र 28/11/2114
केतु 06/06/2058	शुक्र 15/07/2076	सूर्य 24/08/2092	चंद्र 27/01/2105	00/00/0000
शुक्र 04/02/2061	सूर्य 27/06/2077	चंद्र 23/01/2094	मंगल 25/06/2105	00/00/0000
सूर्य 23/11/2061	चंद्र 26/01/2079	मंगल 20/01/2095	राहु 13/07/2106	00/00/0000
चंद्र 25/03/2063	मंगल 06/03/2080	राहु 09/08/2097	गुरु 19/06/2107	00/00/0000
मंगल 29/02/2064	राहु 11/01/2083	गुरु 14/11/2099	शनि 28/07/2108	00/00/0000
राहु 25/07/2066	गुरु 24/07/2085	शनि 26/07/2102	बुध 25/07/2109	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 14 वर्ष 7 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध
24/07/2025	21/12/2025	08/01/2027	15/12/2027	23/01/2029
21/12/2025	08/01/2027	15/12/2027	23/01/2029	20/01/2030
मंगल 02/08/2025	राहु 16/02/2026	गुरु 22/02/2027	शनि 17/02/2028	बुध 15/03/2029
राहु 24/08/2025	गुरु 08/04/2026	शनि 17/04/2027	बुध 14/04/2028	केतु 05/04/2029
गुरु 13/09/2025	शनि 08/06/2026	बुध 05/06/2027	केतु 08/05/2028	शुक्र 05/06/2029
शनि 07/10/2025	बुध 01/08/2026	केतु 25/06/2027	शुक्र 14/07/2028	सूर्य 23/06/2029
बुध 28/10/2025	केतु 24/08/2026	शुक्र 20/08/2027	सूर्य 04/08/2028	चंद्र 23/07/2029
केतु 06/11/2025	शुक्र 27/10/2026	सूर्य 06/09/2027	चंद्र 06/09/2028	मंगल 13/08/2029
शुक्र 01/12/2025	सूर्य 15/11/2026	चंद्र 05/10/2027	मंगल 30/09/2028	राहु 06/10/2029
सूर्य 08/12/2025	चंद्र 17/12/2026	मंगल 25/10/2027	राहु 30/11/2028	गुरु 24/11/2029
चंद्र 21/12/2025	मंगल 08/01/2027	राहु 15/12/2027	गुरु 23/01/2029	शनि 20/01/2030
मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	राहु - राहु
20/01/2030	18/06/2030	18/08/2031	24/12/2031	24/07/2032
18/06/2030	18/08/2031	24/12/2031	24/07/2032	06/04/2035
केतु 29/01/2030	शुक्र 28/08/2030	सूर्य 25/08/2031	चंद्र 11/01/2032	राहु 19/12/2032
शुक्र 23/02/2030	सूर्य 18/09/2030	चंद्र 04/09/2031	मंगल 23/01/2032	गुरु 30/04/2033
सूर्य 02/03/2030	चंद्र 24/10/2030	मंगल 12/09/2031	राहु 24/02/2032	शनि 03/10/2033
चंद्र 14/03/2030	मंगल 18/11/2030	राहु 01/10/2031	गुरु 24/03/2032	बुध 19/02/2034
मंगल 23/03/2030	राहु 21/01/2031	गुरु 18/10/2031	शनि 26/04/2032	केतु 18/04/2034
राहु 14/04/2030	गुरु 19/03/2031	शनि 07/11/2031	बुध 27/05/2032	शुक्र 29/09/2034
गुरु 04/05/2030	शनि 25/05/2031	बुध 25/11/2031	केतु 08/06/2032	सूर्य 18/11/2034
शनि 28/05/2030	बुध 24/07/2031	केतु 03/12/2031	शुक्र 13/07/2032	चंद्र 08/02/2035
बुध 18/06/2030	केतु 18/08/2031	शुक्र 24/12/2031	सूर्य 24/07/2032	मंगल 06/04/2035
राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध	राहु - केतु	राहु - शुक्र
06/04/2035	30/08/2037	06/07/2040	23/01/2043	11/02/2044
30/08/2037	06/07/2040	23/01/2043	11/02/2044	11/02/2047
गुरु 01/08/2035	शनि 11/02/2038	बुध 15/11/2040	केतु 15/02/2043	शुक्र 11/08/2044
शनि 18/12/2035	बुध 08/07/2038	केतु 08/01/2041	शुक्र 20/04/2043	सूर्य 05/10/2044
बुध 20/04/2036	केतु 07/09/2038	शुक्र 12/06/2041	सूर्य 09/05/2043	चंद्र 04/01/2045
केतु 10/06/2036	शुक्र 27/02/2039	सूर्य 29/07/2041	चंद्र 10/06/2043	मंगल 09/03/2045
शुक्र 03/11/2036	सूर्य 20/04/2039	चंद्र 15/10/2041	मंगल 02/07/2043	राहु 21/08/2045
सूर्य 17/12/2036	चंद्र 16/07/2039	मंगल 08/12/2041	राहु 29/08/2043	गुरु 14/01/2046
चंद्र 28/02/2037	मंगल 15/09/2039	राहु 27/04/2042	गुरु 19/10/2043	शनि 06/07/2046
मंगल 20/04/2037	राहु 18/02/2040	गुरु 29/08/2042	शनि 18/12/2043	बुध 09/12/2046
राहु 30/08/2037	गुरु 06/07/2040	शनि 23/01/2043	बुध 11/02/2044	केतु 11/02/2047

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

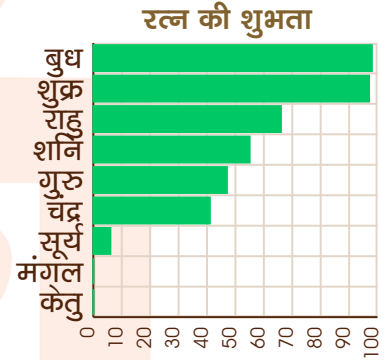


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	97%	धन, भाग्योदय
गोमेद	राहु	66%	धन
नीलम	शनि	55%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	47%	पराक्रम हानि, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	41%	व्यय, हानि
माणिक्य	सूर्य	6%	पराक्रम हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	व्यय, दुर्घटना, पराक्रम हानि
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/07/2009	0%	16%	0%	100%	47%	100%	61%	72%	3%
सूर्य	25/07/2015	31%	52%	0%	98%	55%	85%	35%	53%	0%
चंद्र	24/07/2025	19%	58%	0%	100%	47%	97%	55%	53%	0%
मंगल	24/07/2032	19%	52%	0%	86%	55%	97%	55%	53%	3%
राहु	25/07/2050	0%	16%	0%	98%	47%	100%	61%	78%	0%
गुरु	25/07/2066	19%	52%	0%	86%	61%	85%	55%	66%	0%
शनि	24/07/2085	0%	16%	0%	100%	47%	100%	67%	72%	0%
बुध	26/07/2102	19%	16%	0%	100%	47%	100%	55%	66%	0%
केतु	25/07/2109	0%	16%	0%	98%	47%	100%	35%	53%	16%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
सम
सम

क्षेत्र

दम्पति
अल्प बचत
व्यय
स्वास्थ्य
पराक्रम हानि



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी तथा सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगी। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगी। आपके पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगी।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी। परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगी जिससे कार्य क्षेत्र में

आप उन्नति प्राप्त करेंगी। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी। आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगी।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराकमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी

आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मूर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(25/07/2015 - 24/07/2025)

चंद्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 25/07/2015 को आरंभ और 24/07/2025 को समाप्त होगी।

चन्द्र द्वादश भाव में अवस्थित है और उसे प्रबल कर रहा है। द्वादश भाव नुकसान और विघ्न, क्षति, और अपव्यय, कड़ी मजदूरी और धोखा, उदार दान, परिवार से अलगाव, छिपे दुश्मन, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, घोटाला, अपमान तथा गुप्त दुःख का सूचक है। अतः दस वर्षों की यह अवधि मिश्रित प्रतिक्रियाओं से भरी होगी जिसमें आप उत्थान-पतन दोनों की आशा कर सकते हैं।

स्वास्थ्य :

आपका जीवन सामान्य रहेगा, किन्तु, कुछ विकृति की सम्भावना है। आपकी आँखें इस दशा में कमजोर हो सकती हैं, अतः इनकी देखभाल करें। आपका मस्तिष्क संकुचित हो सकता है जिससे आपका जीवन अन्धकारमय हो जाएगा और आप अलग-थलग पड़ जाएंगे।

अर्थ और सम्पत्ति : अर्थ की दृष्टि से यह अवधि आपके लिए सामान्य रहेगी और चन्द्र की इस दशा के दौरान आप अपनी सम्पत्तियों व बैंक बैलेंस में वृद्धि करने की स्थिति में नहीं होंगे। जहाँ-तहाँ निवेश करने के प्रति सावधानी बरतें, इससे इस दशा में नुकसान हो सकता है।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट रहेंगे और व्यवसाय में परिवर्तन के लिए स्थान बदल सकते हैं। मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा नये व्यवसाय आरम्भ के क्रम में आप कहीं दूर भी जा सकते हैं। अपने सभी सौदों में सावधानी बरतें क्योंकि आप जो भी नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे उसमें नुकसान हो सकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन-साथी आपके सहायक होंगे और आप अपने पारिवारिक जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सौहार्द्रपूर्ण होगा। आपके बच्चे सहायक और आज्ञाकारी होंगे और परिवार में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करेंगे। किन्तु इस दशा में बीमारी तथा अन्य विषयों पर अत्यधिक व्यय होगा। आप धार्मिक कार्यों पर भी व्यय करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

महादशा :- मंगल
(24/07/2025 - 24/07/2032)

मंगल की महादशा 24/07/2025 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 24/07/2032 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नहीं होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सद्भा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(24/07/2025 - 21/12/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 24/07/2025 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 24/07/2025 को प्रारंभ होकर 21/12/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको आर्थिक नुकसान से बचने के लिए सावधान रहना चाहिए। आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं जिनमें कुछ व्यर्थ हो सकती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग में काम करने करने वाले लाभान्वित होंगे। लाभदायक अनुबंध या समझौता संभव है। जीवनसाथी से कुछ मनमुटाव हो सकता है। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है पर वे प्रतिस्पर्धियों और विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति खरीद सकते हैं या वर्तमान जायदाद में मरम्मत आदि करवा सकते हैं। माता सौभाग्यशाली रहेंगी; उनकी कुछ यात्राएं हो सकती हैं। आपके छोटे भाई-बहन कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा या कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध हो सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदातओं को लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

नेत्र, पैर के रोग, पित्तविकार से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(21/12/2025 - 08/01/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 24/07/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 21/12/2025 को प्रारंभ होकर 08/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से भी आय होगी। कटुवचन से परिवार की या व्यापार की शांति भंग हो सकती है।

आपके जीवनसाथी के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, व्याधि हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपकी माता के सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों की यात्राएं हो सकती हैं, उनके खर्च बढ़ेंगे,

गुप्त शत्रु परास्त होंगे, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, निवास में परिवर्तन हो सकता है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर से सेवारत हैं तो तरक्की करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता धनार्जन करेंगे जबकि व्यापारियों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन और लाभ का संकेत है।

आपको खानपान का ख्याल रखना चाहिए। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे या मुख की मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(08/01/2027 - 15/12/2027)**

आपकी मंगल की महादशा 24/07/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/01/2027 को प्रारंभ होकर 15/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप भाइयों के माध्यम से धन प्राप्त करेंगे। आपकी वाक्शक्ति उत्तम रहेगी; लेखन व शिक्षण से लाभान्वित हो सकते हैं। सरकार से लाभ मिलेगा। लघु यात्राएं सफल हो सकती हैं। सुख के साधन क्रय करेंगे। प्रसिद्धि और समृद्धि का योग है। वरिष्ठ व्यक्ति प्रसन्न होंगे। विवाह हो सकता है। व्यापार में फायदा होगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

आपके जीवनसाथी की किस्मत चमकेगी, यात्राएं होंगी, प्रगति के अवसर मिलेंगे। आपके पिता को भागीदारी से लाभ होगा, घरेलू सुख रहेगा, सफलता मिलेगी। माता की यात्राएं होंगी। भाई-बहनों को उच्चपद, शत्रुओं से मुक्ति, चुनाव में सफलता और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सम्मान मिलेगा, परीक्षा में सफल होंगे, शत्रु परास्त होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो चुनाव में सफल होंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के धन का संचय होगा, कार्यों में सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान की तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए केसर, हल्दी, चने की दाल दान में दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(15/12/2027 - 23/01/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 24/07/2025 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 15/12/2027 को प्रारंभ होकर 23/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु,

सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे। जिम्मेदारियों को धैर्य और कार्यकुशलता से निभाएंगे। सफलता अधिकारियों से संघर्ष के उपरांत मिलेगी। खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है। समाजसेवा और दान आदि में रुचि रहेगी। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उत्साह बना रहेगा। अध्ययन और परिश्रम के लिए समय उत्तम है।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी। माता को रिश्तेदारों से सुख-सुविधाएं प्राप्त होंगी, लघु यात्राएं होंगी। भाई-बहनों को जायदाद की खरीद-फरोख्त से लाभ होगा, शिक्षा में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे, परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपकी संतान धनी बनेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सुदृढ़ता आएगी। उच्चाधिकारी प्रशंसा करेंगे। परामर्शदाता धनी बनेंगे। व्यापारी कोई नया कार्य प्रारंभ कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर में छोटी-मोटी बीमारियों से प्रतिरोध की शक्ति रहेगी। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना भैरवजी के रूप में करें।

अंतर्दशा :- मंगल - बुध (23/01/2029 - 20/01/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 24/07/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 23/01/2029 को प्रारंभ होकर 20/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप बहुत से काम पूरे करेंगे। आपकी सोचने-समझने की शक्ति उत्तम रहेगी और आप लेखन, पठन, शिक्षण और विचार विनिमय आदि में व्यस्त रह सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे। उद्योग-व्यापार आदि से धन कमा सकते हैं। अचानक यात्रा हो सकती है, उच्च शिक्षा के अवसर मिल सकते हैं। प्रकाशन और व्यवसाय से लाभ के लिए शुभ समय है।

आपके जीवनसाथी के लिए समय सौभाग्यशाली रहेगा; उन्हें व्यापारिक यात्राओं से लाभ होगा। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में कमाई होगी। आपकी माता दान आदि सत्कर्मों पर धन खर्च कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों का विवाह हो सकता है, उनके लिए यात्रा का योग है और संचार माध्यम से जुड़ सकते हैं।

आपकी संतान के बहुत से मित्र होंगे, सम्मान मिलेगा और परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय के कार्य आदि में सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी धन कमाएंगे, यात्रा करेंगे।

गले और स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को चारा आदि खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com